बाइबल की एक कहानी



आशा | उद्देश्य | जीवन

बचाव



योशिय्याह और व्यवस्था की पुस्तक

नम्र हृदय से परमेश्वर का वचन सुनने की कहानी।



एक युवा राजा

जब योशिय्याह यरूशलेम में राजा बना, वह केवल आठ वर्ष का था। बच्चा होने पर भी उसने साहस से अपने सामने की बड़ी जिम्मेदारी स्वीकार की।



योशिय्याह ने सही बात चुनी

योशिय्याह ने वही किया जो परमेश्वर को प्रसन्न करता था। उसने राजा दाऊद के अच्छे उदाहरण का अनुसरण किया और सही मार्ग से न हटने का प्रयास किया।



मन्दिर को मरम्मत की जरूरत थी

कई वर्ष बाद, अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में, योशिय्याह ने देखा कि मन्दिर को मरम्मत की आवश्यकता है और उसने काम शुरू कराने का निर्णय लिया।



शापान के लिए एक काम

राजा ने शास्त्री शापान को मन्दिर भेजा। उसे याजक हिल्कियाह से बात करके उस धन की व्यवस्था करनी थी जो लोगों ने मरम्मत के लिए दिया था।



विश्वासयोग्य कामगार

धन बढ़इयों, राजमिस्त्रियों और निर्माण करने वालों को दिया गया। वे इतनी ईमानदारी से काम करते थे कि हर सिक्के का हिसाब लेना आवश्यक नहीं था।



भूली हुई पुस्तक

काम के दौरान याजक हिल्कियाह को मन्दिर में परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक मिली। यह एक ऐसा खजाना था जो बहुत समय से भुला दिया गया था।



शापान ने पुस्तक पढ़ी

हिल्कियाह ने पुस्तक शापान को दी। शास्त्री ने उसे सावधानी से खोला और उन वचनों को पढ़ने लगा जिन्हें लोगों को फिर याद करना चाहिए था।



पुस्तक राजा के पास पहुँची

शापान महल लौटा, उसने बताया कि मरम्मत का काम आगे बढ़ रहा है और फिर कहा, 'याजक हिल्कियाह ने मुझे एक पुस्तक दी है।' तब उसने राजा के सामने उसे पढ़ा।



योशिय्याह ने दुख से सुना

व्यवस्था सुनकर योशिय्याह समझ गया कि लोग परमेश्वर से बहुत दूर चले गए थे। गहरे दुख में उसने नम्रता के चिन्ह के रूप में अपना वस्त्र फाड़ लिया।



वह जानना चाहता था कि क्या करना चाहिए

राजा ने हिल्कियाह, शापान और दूसरे सेवकों से कहा कि वे परमेश्वर से पूछें। वह सन्देश को ठीक से समझना और जानना चाहता था कि उसे क्या करना चाहिए।



हुल्दा भविष्यद्वक्त्री

दूत हुल्दा नामक भविष्यद्वक्त्री के पास गए जो यरूशलेम में रहती थी। उसने उनका प्रश्न सुना और उन्हें परमेश्वर का उत्तर बताया।



परमेश्वर ने उसका हृदय देखा

हुल्दा ने समझाया कि वर्षों की अवज्ञा के कारण परिणाम आएँगे। पर परमेश्वर ने देखा था कि योशिय्याह नम्र हुआ, दुखी हुआ और सच्चाई से सुनने लगा।



परमेश्वर का वचन एक खजाना है

दूत लौटकर राजा के पास उत्तर लाए। योशिय्याह ने समझा कि परमेश्वर के वचन को आदर, ध्यान और तैयार हृदय से सुनना चाहिए।